

## ● सुनो, समझो और सुनाओ :



### ३. असली गहने



बच्चो ! तुमने अपनी दादी-नानी से बहुत सारी कहानियाँ सुनी होंगी । आओ, आज मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ । कुछ वर्ष पहले की बात है । वीरसिंह नामक गाँव था । उस गाँव के छोटे-से परिवार में एक बालक रहता था । वह बड़ा ही सीधा-सादा, बुद्धिमान एवं होनहार था । उसकी माँ का नाम भगवती देवी था । पढ़ाई के साथ-ही-साथ वह दिन-रात अपनी माँ की सेवा में लगा रहता था । माँ भी उसे बहुत प्यार करती थीं । माँ का जीवन सादा जीवन, उच्च विचारवाला था । उन्हें तड़क-भड़क पसंद नहीं थी । उनका रहन-सहन बहुत ही साधारण था ।

एक रोज गाँव में बारात आई । गाँव की अधिकांश औरतें आभूषणों से सुसज्जित होकर बारात देखने गईं मगर उसकी माँ के पास एक भी गहना नहीं था । यही बात उसने एक उत्सव में भी देखी थी । अपनी माँ को वह नए-नए कपड़ों और गहनों से सजी-धजी देखना चाहता था पर क्या

करता ! वह तो अभी छोटा था । उसने मन-ही-मन तय कर लिया कि बड़ा होकर वह भी अपनी माँ के लिए गहने जरूर बनवाएगा ।

एक रात भोजन करने के बाद माँ के पैर दबाते समय उसने मन की बात स्पष्ट करने के लिए पूछा, “माँ, तुम्हारे पास अच्छा कपड़ा और कोई गहना नहीं है न ?”

“नहीं तो ! मगर बात क्या है बेटा ?” माँ ने अचरज से पूछा ।

“माँ, मेरी इच्छा है कि तुम भी गाँव की अन्य औरतों की तरह नए कपड़े पहनो और गहनों से सज-धजकर किसी आयोजन में जाया करो ।” फिर बालक ने पुलकित होकर कहा, “माँ, बड़ा होने पर मैं तुम्हारे लिए अच्छे-अच्छे कपड़े लाऊँगा । तुम्हारे लिए गहने भी बनवाऊँगा ।” “अच्छा, तो यह बात है,” बेटे के प्यार में माँ का गला भर आया था ।



❑ विद्यार्थियों को कहानी सुनाकर मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । उपरोक्त कहानी अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें । विद्यार्थी अपने माता-पिता एवं बुजुर्गों से क्या-क्या बातें करते हैं; यह कक्षा में परस्पर चर्चा करने और बताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।



फिर मुस्कराते हुए उन्होंने कहा, “बेटे, परिश्रम से खूब पढ़ाई करो । बड़े बनो । तुम्हीं मेरे सबसे अच्छे गहने हो । आदमी गहनों और कपड़ों से नहीं बल्कि अपने व्यवहार और कर्म से बड़ा बनता है ।” बालक ने कहा, “पर माँ, मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए गहने बनवाऊँ ।” माँ कुछ देर सोचती रहीं फिर बोलीं, “बेटा, यदि तुम्हें अपनी माँ से इतना ही प्यार है तो मेरे लिए बस तीन गहने बनवा देना ।”

“बस तीन ही, माँ ! पर कौन-कौन-से ?” बालक ने अधीरता से सवाल किया ।

“बेटे ! इस गाँव में विद्यालय नहीं है । विद्यालय दूर होने के कारण गाँव के बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं । वे प्रगति नहीं कर पाते इसलिए गाँव में एक पाठशाला खुलवा देना । मरीजों के उपचार की कोई व्यवस्था



नहीं है यहाँ; उचित उपचार के अभाव में छोटे बच्चे एवं जवान अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं । अतः एक अस्पताल की स्थापना करवाना । गरीब-अनाथ बरसात में भीगते हैं । जाड़े में ठंड से ठिठुरकर अपनी रात गुजारते हैं । उनके रहने-खाने के लिए एक अनाथालय बनवा दो । बस यही तीन असली गहने मेरे लिए बनवा देना बेटा” माँ ने बेटे की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा । बेटे की आँखों में आँसू छलक आए । वह सोचने लगा, ‘माँ कभी भी अपने लिए कुछ नहीं माँगतीं, हमेशा दूसरों के लिए ही चिंतित रहती हैं ।’



बालक ने माँ के पैर छुए और उसी दिन से माँ की इच्छा पूरी करने में जी-जान से लग गया । आगे चलकर उसने माँ की तीनों इच्छाएँ पूरी की । केवल इतना ही नहीं; उसने देश और समाज की भलाई के अनेक काम किए । जानते हो यह बालक कौन था ? यही बालक आगे चलकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से विख्यात हुआ । विद्यासागर जी ने अपना पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया ।

– दीनदयाल शर्मा, ‘दिनेश्वर’

□ विद्यार्थियों के गुट बनाकर पाठ में आए एवं अन्य उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्द समझाएँ । शब्दों के पहले ‘स’, ‘प्रति’ आदि उपसर्ग तथा शब्दों के बाद ‘ईय’, ‘दार’ आदि प्रत्यय लगाकर शब्द तैयार करवाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए ऐसे शब्दों की सूची बनवाएँ ।